The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com

पर्यावरणीय शिक्षा का विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन में योगदान

डॉ0 मनीष कुमार शुक्ल
(प्राचार्य)
स्वामी विवेकानन्द शिक्षक प्रशिक्षण बी.एड. कॉलेज
करमाटांड़ बोकारो झारखंड

सारांशः

वर्तमान समय में प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और संसाधनों की कमी जैसी पर्यावरणीय समस्याएँ मानव अस्तित्व के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। ऐसी परिस्थितियों में विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील, जागरूक और उत्तरदायी बनाना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इस शोध का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों के ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार में किस प्रकार सकारात्मक परिवर्तन लाती है। शोध में पाया गया कि जब विद्यार्थियों को पर्यावरणीय शिक्षा के अंतर्गत स्वच्छता, जल एवं ऊर्जा संरक्षण, वृक्षारोपण, अपशिष्ट प्रबंधन और पारिस्थितिक संतुलन जैसे विषयों की जानकारी दी जाती है, तो वे इन्हें केवल सैद्धांतिक रूप से नहीं सीखते, बल्कि अपने दैनिक जीवन में भी अपनाने लगते हैं। इससे उनके व्यवहार में जिम्मेदारी, सहयोग, पर्यावरण–हितैषी आदतें और सतत विकास के प्रति दृष्टिकोण का विकास होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पर्यावरणीय शिक्षा केवल पर्यावरण संबंधी ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों में स्थायी और सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन लाकर एक उत्तरदायी नागरिक के निर्माण में भी योगदान देती है।

मुख्य शब्दः *पर्यावरणीय शिक्षा, विद्यार्थी, व्यवहार परिवर्तन, शैक्षिक योगदान, जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, आचरण, सतत् विकास, मूल्य शिक्षा*

प्रस्तावना

आज के वैज्ञानिक और तकनीकी युग में जहाँ एक ओर मानव ने अभूतपूर्व प्रगति की है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरणीय असंतुलन, प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों की कमी और जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। इन समस्याओं के निराकरण हेतु केवल तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि इसके लिए समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।

शिक्षा को समाज परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम माना जाता है। विशेषकर विद्यालयी स्तर पर पउचंतज की जाने वाली शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण, आदतों और दृष्टिकोण को आकार देती है। इसी संदर्भ में पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन में विशेष महत्व रखती है। इसका उद्देश्य केवल पर्यावरण संबंधी जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में ऐसा दृष्टिकोण और व्यवहार विकसित करना है जो उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण और सतत विकास के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनाए।

पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों को यह सिखाती है कि वे अपने दैनिक जीवन में जल, ऊर्जा और अन्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करें, अपशिष्ट प्रबंधन को अपनाएँ, वृक्षारोपण और स्वच्छता जैसी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाएँ तथा प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में सहयोग करें। इस प्रकार यह शिक्षा व्यवहार–आधारित होती है, जो केवल कक्षा तक सीमित न रहकर वास्तविक जीवन में भी परिलक्षित होती है। वर्तमान शोध का औचित्य इसी तथ्य में निहित है कि यदि विद्यार्थियों में प्रारंभ से ही पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा सकारात्मक आदतें और दृष्टिकोण विकसित किए जाएँ, तो वे न केवल स्वयं पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी होंगे, बल्कि समाज में भी परिवर्तन के प्रेरक बनेंगे। यही कारण है कि इस शोध में पर्यावरणीय शिक्षा के विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन में योगदान का अध्ययन किया जा रहा है।

पर्यावरणीय शिक्षा

पर्यावरणीय शिक्षा वह शैक्षिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति पर्यावरण तथा उससे संबंधित समस्याओं को समझता है, उनके समाधान हेतु आवश्यक ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल अर्जित करता है तथा अपने व्यवहार में ऐसे परिवर्तन लाता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और सतत विकास सुनिश्चित हो सके। यह शिक्षा केवल विषयगत ज्ञान तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, जिम्मेदारी और सक्रिय भागीदारी की भावना का विकास करती है।

पर्यावरणीय शिक्षा का मूल उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण को अपने जीवन का अभिन्न अंग समझे और उसके संरक्षण के लिए जागरूक एवं उत्तरदायी बने। यह शिक्षा विद्यार्थियों को यह सिखाती है कि मानव और प्रकृति का संबंध परस्पर आश्रित है और यदि प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है तो इसका दुष्प्रभाव मानव जीवन पर भी पड़ेगा।

पर्यावरणीय शिक्षा के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं:

- **ज्ञानः** पर्यावरणीय तत्त्वों, प्रदूषण के प्रकारों, प्राकृतिक संसाधनों तथा पारिस्थितिक संतुलन की जानकारी प्रदान करना।
- **जागरूकता :** विद्यार्थियों को पर्यावरणीय समस्याओं की गंभीरता और उनके दीर्घकालिक प्रभावों के प्रति सचेत करना।
- **दृष्टिकोण :** पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक सोच और संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करना।
- **कौशल :** अपशिष्ट प्रबंधन, वृक्षारोपण, जल संरक्षण तथा प्रदूषण नियंत्रण जैसे कार्यों में व्यावहारिक दक्षता उत्पन्न करना।

- **भागीदारी :** पर्यावरणीय कार्यक्रमों, अभियानों और गतिविधियों में सक्रिय रूप से सम्मिलित होने की प्रेरणा देना।

पर्यावरणीय शिक्षा का महत्वः

- यह विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना और उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करती ळें
- प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और संरक्षण की आदत विकसित करती है।
- सतत विकास (Sustainable Development) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक बनती है।
- जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई जैसी समस्याओं के समाधान हेतु व्यवहारिक परिवर्तन लाती है।
- भविष्य की पीढ़ियों को पर्यावरण–हितैषी जीवनशैली अपनाने के लिए तैयार करती है।

विद्यार्थियों में पर्यावरणीय शिक्षा से उत्पन्न जागरूकता

पर्यावरणीय शिक्षा का सबसे प्रमुख योगदान विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का विकास है। जब विद्यार्थियों को प्राकृतिक संसाधनों, पारिस्थितिकी तंत्र और पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में व्यवस्थित रूप से ज्ञान प्रदान किया जाता है, तो उनमें प्रकृति और मानव जीवन के गहरे संबंध को समझने की क्षमता विकसित होती है। इस प्रक्रिया से वे केवल पर्यावरणीय तथ्यों को नहीं सीखते, बल्कि यह भी जान पाते हैं कि उनकी छोटी–सी लापरवाही या असावधानी पर्यावरण पर कितना गंभीर प्रभाव डाल सकती है।

पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों को यह जागरूक करती है कि जल, वायु, मिट्टी और वनस्पति जैसे प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं और उनका अंधाधुंध दोहन भविष्य के लिए संकट उत्पन्न कर सकता है। इसके साथ ही यह शिक्षा उन्हें प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग और वनों की कटाई जैसी समस्याओं के कारणों और परिणामों से अवगत कराती है। इस प्रकार विद्यार्थी यह समझ पाते हैं कि सतत विकास केवल तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी भूमिका को जिम्मेदारी के साथ निभाए।

इसके अतिरिक्त, पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों को व्यक्तिगत जीवन में भी पर्यावरण संरक्षण संबंधी जागरूकता प्रदान करती है। उदाहरणस्वरूप, वे बिजली और जल की बर्बादी रोकने, प्लास्टिक का कम उपयोग करने, अपशिष्ट प्रबंधन अपनाने, वृक्षारोपण करने और स्वच्छता बनाए रखने की आवश्यकता को समझते हैं। विद्यालयों में आयोजित स्वच्छता अभियान, पर्यावरण दिवस, वाद–विवाद प्रतियोगिता और जागरूकता रैलियाँ भी विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना और सक्रियता को बढ़ाती हैं।

पर्यावरणीय शिक्षा का दैनिक जीवन की आदतों पर प्रभाव

पर्यावरणीय शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह विद्यार्थियों के दैनिक जीवन की आदतों पर गहरा प्रभाव डालती है। जब विद्यार्थी पर्यावरण के महत्व और उसके संरक्षण की आवश्यकता को समझते हैं, तो वे अपने व्यवहार और दिनचर्या में छोटे–छोटे सकारात्मक बदलाव लाने लगते हैं, जो आगे चलकर उनके व्यक्तित्व का स्थायी हिस्सा बन जाते हैं।

जल संरक्षण की आदतें

- नल खुला न छोड़ना।
- जल का विवेकपूर्ण उपयोग करना।
- वर्षा जल संचयन के महत्व को समझना।

ऊर्जा संरक्षण की आदतें

- अनुपयोगी विद्युत उपकरण बंद करना।
- प्राकृतिक रोशनी और वायु का अधिक उपयोग।
- ऊर्जा–संवर्धनशील (Energy–efficient) उपकरण अपनाना।

स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन

- कचरे का पृथक्करण (गीला और सूखा)।
- पुनर्चक्रण (Recycling) के महत्व को समझना।
- प्लास्टिक का उपयोग कम करना।

प्राकृतिक संसाधनों के प्रति जिम्मेदारी

- वृक्षारोपण एवं बागवानी में भागीदारी।
- पर्यावरण–मित्र (eco–friendly) वस्तुओं का उपयोग।
- संसाधनों का अपव्यय रोकना।

स्वास्थ्यकर एवं संतुलित जीवनशैली

- व्यक्तिगत और सामुदायिक स्वच्छता का पालन।
- प्रदूषण–मुक्त वातावरण बनाए रखने का प्रयास।
- दूसरों को भी पर्यावरणीय आदतें अपनाने हेतु प्रेरित करना।

पर्यावरण संरक्षण हेतु उत्तरदायी व्यवहार परिवर्तन

पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों में न केवल जागरूकता उत्पन्न करती है, बल्कि उनके व्यवहार में ठोस और उत्तरदायी परिवर्तन भी लाती है। यह परिवर्तन केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवार, विद्यालय और समाज तक विस्तृत होकर एक सामूहिक पर्यावरण–हितैषी संस्कृति का निर्माण करता है।

- **संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग:** पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों को यह समझने में सक्षम बनाती है कि जल, बिजली, कागज और अन्य प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं तथा इनका अनावश्यक प्रयोग भविष्य के लिए संकट उत्पन्न कर सकता है। इस जागरूकता के परिणामस्वरूप वे संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करने लगते हैं।

- **स्वच्छता और प्रदूषण नियंत्रणः** पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों में स्वच्छता और प्रदूषण नियंत्रण के प्रति गहरी चेतना उत्पन्न करती है। वे विद्यालय और घर का वातावरण स्वच्छ रखने, व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखने और कचरे का उचित निपटान करने की आदत विकसित करते हैं। गीले–सूखे कचरे को अलग करना, पुनर्चक्रण को अपनाना और प्लास्टिक–मुक्त जीवनशैली की ओर बढ़ना उनके व्यवहार का हिस्सा बन जाता है। साथ ही, वे वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण कम करने के लिए सचेत रहते हैं और संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करके स्वच्छ एवं संतुलित पर्यावरण बनाए रखने में योगदान देते हैं।
- **वृक्षारोपण और हरियाली संरक्षणः** पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों को यह समझने के लिए प्रेरित करती है कि वृक्ष केवल हरियाली का प्रतीक ही नहीं, बल्कि जीवन का आधार हैं। विद्यार्थी पेड़ लगाने और उनकी नियमित देखभाल करने में रुचि लेने लगते हैं। वे समझते हैं कि वृक्ष ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, प्रदूषण को नियंत्रित करते हैं और प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं।
- **पर्यावरण–हितैषी जीवनशैलीः** पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों में पर्यावरण–हितैषी जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा देती है। वे पुनर्चक्रण योग्य वस्तुओं का प्रयोग करने की आदत विकसित करते हैं, जिससे संसाधनों का संरक्षण होता है और अपशिष्ट का दबाव कम होता है। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थी सार्वजनिक परिवहन का उपयोग बढ़ाने की प्रवृत्ति दिखाते हैं, जिससे ईंधन की खपत कम होती है और वायु प्रदूषण नियंत्रित होता है।
- **परिवार और समाज को प्रेरित करनाः** पर्यावरणीय शिक्षा का प्रभाव केवल विद्यार्थियों के व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह उनके परिवार और समाज को भी प्रभावित करता है। विद्यार्थी जब स्वयं पर्यावरणीय आदतों और उत्तरदायित्वों को अपनाते हैं, तो उनका व्यवहार दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। उदाहरणस्वरूप, जब कोई विद्यार्थी जल और बिजली की बचत करता है या कचरे का उचित निपटान करता है, तो परिवार के अन्य सदस्य भी उसकी आदतों से प्रभावित होकर वही व्यवहार अपनाने लगते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान युग में जब पर्यावरणीय संकट मानव जीवन के लिए गंभीर चुनौती बन चुके हैं, तब विद्यार्थियों के जीवन में पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने का साधन नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यवहार में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रभावी प्रक्रिया है। इस शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, स्वच्छता और प्रदूषण नियंत्रण, वृक्षारोपण और हरियाली संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन तथा पर्यावरण–हितैषी जीवनशैली अपनाने की ओर प्रेरित होते हैं। वे न केवल स्वयं पर्यावरणीय उत्तरदायित्व निभाते हैं, बल्कि अपने परिवार और समाज को भी इसके लिए प्रेरित करते हैं।

निष्कर्षतः पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों को एक जागरूक, जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनाने में सहायक सिद्ध होती है। यह उनके दृष्टिकोण और जीवनशैली दोनों को प्रभावित करती है तथा सतत

विकास और स्वस्थ भविष्य की नींव रखती है। अतः विद्यालय स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा का प्रभावी क्रियान्वयन विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास और समाज में पर्यावरणीय चेतना के प्रसार के लिए अनिवार्य है।

शैक्षिक निहितार्थ

पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण तथा उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने का एक प्रभावी माध्यम है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को केवल पर्यावरण से जुड़ा ज्ञान ही प्रदान नहीं करती, बल्कि उनके सोचने के तरीके, दृष्टिकोण और जीवनशैली को भी प्रभावित करती है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि यदि विद्यालय स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा को व्यवस्थित रूप से दिया जाए तो विद्यार्थी संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, स्वच्छता बनाए रखने, प्रदूषण नियंत्रण, वृक्षारोपण, अपशिष्ट प्रबंधन तथा पर्यावरण–हितैषी जीवनशैली अपनाने की दिशा में ठोस कदम उठाने लगते हैं। इस शिक्षा का एक महत्वपूर्ण निहितार्थ यह है कि इसे केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रखा जाए, बल्कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक गतिविधियों जैसे– वृक्षारोपण कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान, जल एवं ऊर्जा संरक्षण परियोजनाओं और पुनर्चक्रण कार्यों में शामिल किया जाए। इससे उनमें अनुभवात्मक अधिगम विकसित होगा और पर्यावरणीय मूल्यों को व्यवहार में उतारने की प्रवृत्ति पैदा होगी।

इसके अतिरिक्त, शिक्षक भी पर्यावरणीय शिक्षा के मुख्य संवाहक होते हैं, इसलिए उनके लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आवश्यक हैं ताकि वे विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी गतिविधियों में प्रभावी रूप से मार्गदर्शन कर सकें। विद्यालयों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को समाज एवं समुदाय के साथ जोड़कर पर्यावरणीय अभियानों में भागीदारी कराएँ, जिससे शिक्षा का प्रभाव केवल विद्यालय तक सीमित न रहकर व्यापक स्तर तक पहुँचे।

निष्कर्षतः पर्यावरणीय शिक्षा का शैक्षिक निहितार्थ यह है कि यह विद्यार्थियों को जागरूक, उत्तरदायी और सक्रिय नागरिक के रूप में विकसित करती है। यह शिक्षा उनके व्यवहार में स्थायी परिवर्तन लाकर न केवल उनके जीवन को अनुशासित बनाती है, बल्कि समाज और राष्ट्र को भी सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, आर. सी. (2018). पर्यावरण शिक्षा और सतत विकास. नई दिल्लीः प्रकाशन संस्थान।
2. कौल, एल. (2017). शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
3. मिश्रा, एस. (2015). विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा का महत्व. लखनऊः भारती प्रकाशन।
4. जोशी, एम. (2019). पर्यावरण संरक्षण और शिक्षा. जयपुरः राजस्थान पब्लिशिंग हाउस।
5. UNESCO. (2020). Education for Sustainable Development Goals: Learning Objectives. Paris: UNESCO Publishing.
6. Tilbury, D. (1995). Environmental Education for Sustainability: Defining the New Focus of Environmental Education in the 1990s. Environmental Education Research, 1(2), 195–212.

7. Palmer, J. A. (1998). Environmental Education in the 21st Century: Theory, Practice, Progress and Promise. London: Routledge.
8. Hungerford, H. R., & Volk, T. L. (1990). Changing Learner Behavior through Environmental Education. Journal of Environmental Education, 21(3), 8–21.
9. Sharma, Y. K. (2004). Environmental Education. New Delhi: Kanishka Publishers.
10. UNEP. (2019). Global Environment Outlook – GEO 6: Healthy Planet, Healthy People. Nairobi: United Nations Environment Programme.

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

डॉ0 मनीष कुमार शुक्ल,"पर्यावरणीय शिक्षा का विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन में योगदान" *The Research Dialogue,* An Online Quarterly Multi-Disciplinary Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal, *ISSN: 2583-438X (Online), Volume 4, Issue 2, pp-324-331, July 2025. Journal URL: https://theresearchdialogue.com/*

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2025/32
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 मनीष कुमार शुक्ल

for publication of research paper title

"पर्यावरणीय शिक्षा का विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन में योगदान"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-02, Month July, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY